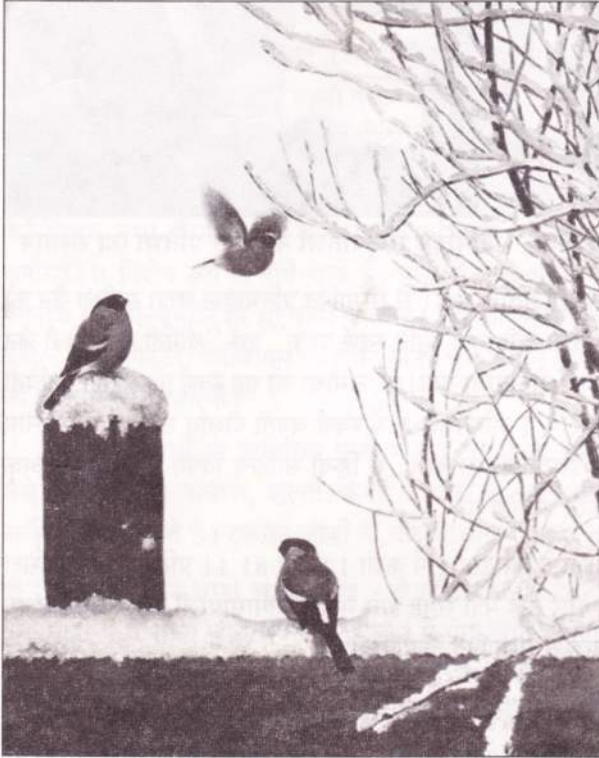


CHIRPING SPARROW



Title Verification No. : UPENG 03049/24/1/2005-TC



Forgiveness

Forgiveness, forgiveness,

Why not forgive

It's the first step to problem solving,

Forgiveness, forgiveness,

Forgiveness, forgiveness

Why not forgive

It rids us of anger,

Forgiveness, forgiveness,

So why not forgive,

It does you much good,

Forgiveness, forgiveness,

Just do it - forgive.

अवार्ड विशेषांक

Young Achiever



Amit Jain

CRS - CyDex, Inc Outstanding Pharmaceutical Paper Award

Dr. Amit K. Jain received his B. Pharm. in 1995 from University of Sagar, India, M. Pharm. Sci. (Medicinal & Natural Products) in 1997 from University of Mumbai, India, and Ph.D. (Pharmaceutics) in 2002 from National Institute of Pharmaceutical Education & Research (NIPER), India. For a short period of time, he worked in the Drug Discovery group at Quest Institute of Life Sciences, India, then in 2002, he joined Prof. Mitragotri's research group at the University of California Santa Barbara (UCSB). At UCSB, he and his team (Prof. Mitragotri and Pankaj Karande) have developed a tool called INSIGHT which can screen the transdermal formulations at significantly higher rate with minimal possible use of skin as compared to existing tools. His recent work on the design of chemical penetration enhancers has shown the importance of molecular forces like hydrogen bonding, dispersive forces, and lipophilicity in potency and safety of penetration enhancers. He has published 11 research articles, 3 review articles, 3 book chapters, and filed 3 patents.



समीक्षा जैन - महामहिम राष्ट्रपतिजी ने किया प्रतिभा का सम्मान

यंग जैना अवार्ड 2001 से सम्मानित प्रतिभावान छात्रा समीक्षा जैन को "श्रीमती ऊषा देवी मित्रा स्मृति स्वर्ण पदक" एवं "श्रीमती सुन्दर देवी जैन स्मृति पदक" से नवाजा गया। कु. समीक्षा को यह स्वर्ण पदक रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय में आयोजित 21वें स्वर्ण जयंती दीक्षांत समारोह में माननीय महामहिम राष्ट्रपति द्वारा बी.ए. में हिन्दी साहित्य विषय में सर्वाधिक अंक अर्जित करने पर दिये गये।

समीक्षा ने वर्ष 2001 में कक्षा 12वीं में 81.11 प्रतिशत अंक हासिल किये थे, और उन्हें मैत्री समूह द्वारा मुनिश्री क्षमासागरजी के सान्निध्य में यंग जैना अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

Brilliant Players



A. Sowmya Devi, Neyveli,
81.83% in XII Science,
Represented India in the
5th Asian Youth Girls
Volleyball 2005, Participation
in more than 30 State Level
and 8 National Level games.
Selection in Medical.



Coral Jain, Jaipur,
92.83% in XII Commerce,
Young Jaina Awardee
2004. National Lawn
Tennis Player.



Rahul Jain
Balaghat,
86.60% in
XII Science,
State Football &
Volleyball Player



Swati Jain
Bhopal,
82.22% in
XII Science,
State Karate
Player



Harsha Gangwal
Hyderabad,
80.35% in
XII Science,
National Through
Ball Player



Preeti Jain
Tikamgarh,
79.33% in
XII Commerce,
State Softball
Player

CHIRPING SPARROW

Year-1, Issue-IV

Chirping Sparrow is published quarterly by the Maitree Jankalyan Samiti.
It is circulated to all Young Jaina Awardees and friends of Maitree Jankalyan Samiti.

E-mail : maitreesamooh@hotmail.com

website : www.maitreesamooh.com

Mobile : 9425132090

प्रासुक जल का विज्ञान

सामान्य जल में अनेक प्रकार की अशुद्धियाँ धूल, मिट्टी, लवण, खनिज या फिर सूक्ष्मजीवों के रूप में हो सकती हैं। वस्तुतः जल एक सार्वभौमिक घोलक है। यह अपने में प्रत्येक पदार्थ को घोलने (ग्रहण करने) की न्यूनाधिक शक्ति रखता है। वायुमण्डल में पायी जाने वाली गैसों, जैसे - ऑक्सीजन, कार्बन डाइ-ऑक्साइड, नाइट्रोजन, नाइट्रोजन डाइ-ऑक्साइड, सल्फर डाइ-ऑक्साइड आदि को भी घोल लेता है। सामान्य जल में ऑक्सीजन की मात्रा 6 पी.पी.एम. (पार्ट्स पर मिलियन) होती है। कारखानों से निकलने वाली तमाम गैसों सल्फर डाइ-ऑक्साइड तथा हाइड्रोजन सल्फाइड को भी यह घोल लेता है।

पानी में कई प्रकार के खनिज तथा लवण भी पाये जाते हैं। इसमें कैल्शियम तथा मैग्नीशियम के बाइ-कार्बोनेट्स, सल्फेट्स तथा क्लोराइड्स विशेष रूप से पाये जाते हैं। पानी में कुछ मात्रा में लोहा, मैंगनीज तथा एल्यूमीनियम भी पाया जाता है। कुछ अघुलनशील पदार्थ, जैसे - धूल, मिट्टी, कैल्शियम कार्बोनेट आदि भी पानी में पाये जाते हैं, जो पानी में तैरते रहते हैं।

इन सब पदार्थों के अतिरिक्त पानी में कई प्रकार के सूक्ष्म जीव, जैसे - बैक्टीरिया वायरस, अल्गी, फंगी, प्रोटोजोआ, वर्म तथा लार्वा आदि भी पाये जाते हैं। हम इन जीवों के बारे में संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

पानी में पाये जाने वाले सूक्ष्म जीव - बैक्टीरिया

पानी में ये सूक्ष्म जीव सर्वाधिक संख्या में पाये जाते हैं। एक मिली लीटर (एक क्यूबिक सेंटीमीटर) में इनकी संख्या एक अरब तक हो सकती है, या हम कह सकते हैं कि एक बूँद में इनकी संख्या लगभग दस करोड़ तक हो सकती है। इनका आकार 0.1 माइक्रोन से 5 माइक्रोन तक होता है। एक माइक्रोन एक मिली लीटर के हजारवें हिस्से के बराबर होता है। बैक्टीरिया सामान्यतः कॉलोन बनाकर (गुत्थे के गुत्थे) रहते हैं, जिसमें ये एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं।

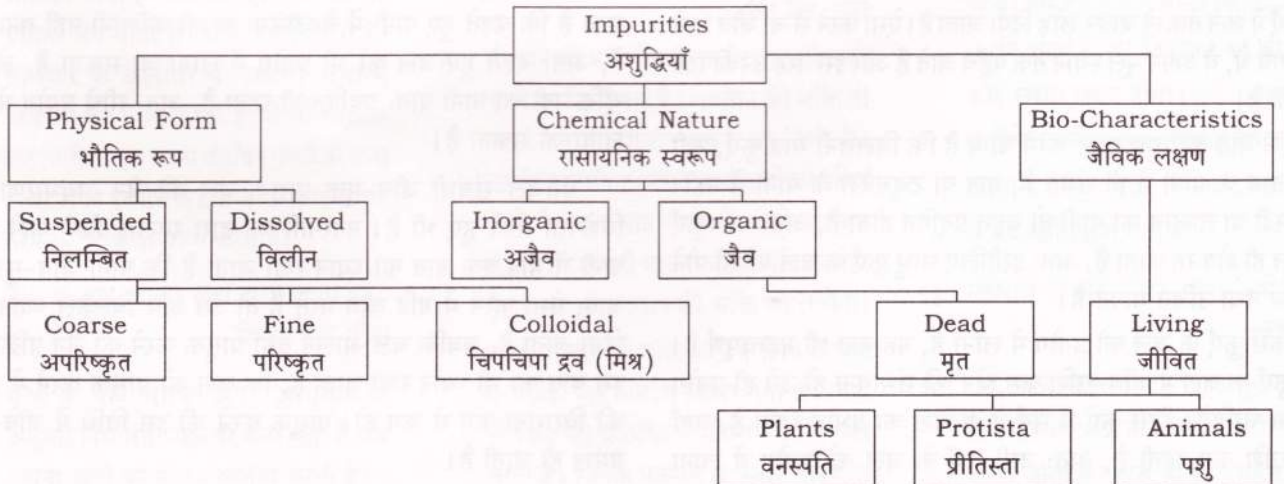
पेयजल तथा उसके स्रोत

पानी में तमाम किस्म की अशुद्धियाँ पायी जाती हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि पानी में घुले सभी पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, बल्कि बहुत से खनिज तो ऐसे हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक हैं, जिनकी आपूर्ति जल द्वारा ही होती है। यदि किसी स्थान के पानी में ये खनिज न हों तो उन खनिजों को आहार के साथ अलग से लेना पड़ता है। हम सभी जानते हैं कि यदि पानी में आयोडीन की कमी हो तो उसे अलग से नमक के साथ लेना पड़ता है। यदि ऐसा न करें तो कई बीमारियाँ हो सकती हैं, अतः पानी में घुलनशील कुछ पदार्थ तो आवश्यक हैं, लेकिन अन्य शेष पदार्थ यदि न हों तो अच्छा है। कैल्शियम तथा मैग्नीशियम के बाइ-कार्बोनेट्स तथा सल्फेट्स पानी को भारी बना देते हैं, इनसे युक्त पानी से साफ-सफाई करने में कठिनाई होती है।

अतः ऐसी स्थिति में यह जानना जरूरी है कि पेयजल कैसा होना चाहिये तथा उसे कहाँ से प्राप्त किया जा सकता है। सामान्य रूप में पेयजल स्वच्छ, रंगहीन, गंधहीन, बैक्टीरिया आदि सूक्ष्म जीवों से रहित तथा पीने में अच्छा लगने वाला होना चाहिये। पानी कई स्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है, जैसे- वर्षा, नदी, तालाब, झरना, कुआँ तथा नलकूप आदि।

जैनधर्मानुसार पेयजल

जैनधर्म के अनुसार स्वच्छ, छना हुआ तथा प्रासुक किये गये जल को ही पीने योग्य माना गया है। जिसमें से एकेन्द्रिय जीव निकल गये हैं, उसे प्रासुक द्रव्य कहा जाता है। अतः जीव रहित जल को प्रासुक कहा गया है। जैनधर्म में जल को एकेन्द्रिय स्थावर जीव माना गया है। जल की एक बूँद में भी असंख्यात सूक्ष्म जीव होते हैं। जल की एक बूँद में जितने जीव हैं, यदि वे कबूतर के बराबर होकर उड़ें तो उनके द्वारा जम्बूद्वीप लबालब भर जाए। ओस, बर्फ, धुएँ के समान पाला, स्थूल बिन्दु रूप-जल, सूक्ष्म बिन्दू-रूप जल, चन्द्रक्रान्त मणि से उत्पन्न शुद्ध जल, झरने से उत्पन्न जल, मेघ का जल और घनोदधिवात जल - ये सब जलकायिक जीव हैं। अतः इन सबसे प्राप्त जल अप्रासुक है तथा पीने योग्य नहीं है। इसे पीने योग्य बनाने के लिए प्रासुक करना अत्यावश्यक है, लेकिन



कुछ प्राकृतिक जल ऐसा भी होता है, जो मूलतः प्रासुक ही होता है। इसमें पाषाण को फोड़कर निकला हुआ जल अर्थात् पर्वतीय झरनों का अथवा रहट द्वारा ताड़ित हुआ और वापियों का गरम-गरम ताजा जल प्रासुक होता है। कहीं-कहीं वर्षा के जल को भी प्रासुक बताया गया है, लेकिन अन्य ग्रन्थों में उसे अप्रासुक माना गया है। वर्षा के जल में कभी-कभी मछलियाँ भी होती हैं तथा बर्फ की भी वर्षा होती है, अतः वर्षा के जल में तो त्रस जीव भी होते हैं, ऐसा माना गया है।

जल प्रासुक करने की विधि

जल को पेय बनाने के लिए उसे प्रासुक करना अत्यावश्यक है, उसे कई प्रकार से प्रासुक किया जा सकता है - (1) कपड़े से छानकर (जल-गालन), (2) पानी में लोंग, हरड़े या जीरा मिलाकर, (3) पानी को गरम करके। यहाँ एक बात ध्यान में रखने योग्य है कि दूसरी तथा तीसरी विधि द्वारा जल प्रासुक करने से पूर्व भी जल को छानना आवश्यक है। इन तीनों विधियों द्वारा जो प्रासुक जल प्राप्त होता है, उसकी मर्यादाएँ अलग-अलग होती हैं। कपड़े से छाना जल दो घड़ी (यानी 48 मिनट), लोंग आदि से प्रासुक किया जल 6 घंटे, गर्म किया गया जल 12 घंटे तथा उबाला हुआ जल 24 घंटे तक प्रासुक रहता है। इसके बाद वह अप्रासुक हो जाता है।

श्वेताम्बर परम्परानुसार अलग-अलग मौसम में उबाले जल की मर्यादा अलग-अलग होती है। तीन बार उबाला हुआ जल ग्रीष्मकाल में 15 घंटे, वर्षा काल में 1 घंटे तथा शीतकाल में 12 घंटे तक अचित्त (प्रासुक) रहता है तथा इसके बाद वह सचित्त हो जाता है।

जल-गालन एक विशिष्ट प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में दो बातें मुख्य हैं - एक, पानी छानना तथा दूसरे, पानी से निकले जीवों की रक्षार्थ जिवानी (जिवाणी), या बिलछनी करना। पानी छानने में छन्ने-संबंधी विवेक अत्यावश्यक है। छन्ने के रूप में काम में लाये जाने वाला कपड़ा पतला, गन्दा या पुराना नहीं होना चाहिये। यह कपड़ा सूती, हाथ का बुना तथा धुला होना चाहिए। यह 12 गिरह (पौन गज) चौड़ा तथा डेढ़ गज लम्बा होना चाहिये, ताकि दोहरा होकर 12 गिरह का चौकोर बन जाए। इस दोहरे कपड़े को ही छन्ने के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। सूती कपड़ा धुलकर गफ हो जाता है, अतः सूती कपड़े के छन्ने में एक और छन्ना अपने आप बन जाता है। ऐसे छन्ने से जब भी पानी छाना जाता है तब जीव उस पर ही रह जाते हैं। चूँकि इन जीवों की भी रक्षा करनी है, अतः इसके लिए जिवानी या बिलछनी करना चाहिये। बिलछनी के लिए छने हुए पानी से ही छन्ने को इस प्रकार धोया जाता है कि छन्ने पर रुके हुए जीव पानी से हट जाएँ। बिलछनी कड़े वाली बाल्टी में करते हैं। इस बाल्टी में छन्ने के धोये हुए पानी को इकट्ठा कर लिया जाता है तथा उसे पुनः कुएँ में जल तक ले जाकर छोड़ दिया जाता है। ऐसा करने से जो जीव छन्ने पर रह गये थे, वे अपने मूल स्थान तक पहुँच जाते हैं और इस तरह उनकी रक्षा हो जाती है।

एक बात यहाँ यह स्पष्ट करने योग्य है कि बिलछनी मात्र कुएँ, नदी या तालाब के पानी में ही संभव है, नल या ट्यूबवैल के पानी में नहीं। चूँकि नदी या तालाब का पानी तो बहुत प्रदूषित होता है, अतः मात्र कुएँ का जल ही शेष रह जाता है, अतः इसीलिए साधु कुएँ के जल को ही पीने के योग्य तथा उचित मानते हैं।

किस कुएँ के जल को प्रयोग में लाना है, यह बात भी महत्वपूर्ण है। जिस कुएँ के जल में जीव-राशि कम होने की संभावना हो उसे ही प्रयोग में लाना चाहिये। जिस कुएँ में सूर्य के प्रकाश का प्रभाव रहता है, वहाँ जीव-राशि कम रहती है, अतः उसी कुएँ के जल को प्रयोग में लाना

चाहिये जिसमें अन्दर तक सूर्य का प्रकाश परावर्तित होकर पहुँचता हो। जो कुआँ अँधेरे स्थान में होता है, उसमें जीव-राशि के अधिक होने की संभावना होती है, अतः उसके जल को प्रयोग में नहीं लाना चाहिये।

लोंग, हरड़े या जीरा आदि से भी पानी प्रासुक करने की एक विधि है इनसे प्रासुक करने में इनमें से किसी एक को पीस कर छने पानी में उतना मिलाना चाहिये जितने से पानी के रंग, गंध तथा स्वाद में अन्तर आ जाए। मात्र एक या दो लोंग डाल देने से जल प्रासुक नहीं होता है।

यदि पानी को गरम करके प्रासुक करना है तो कम गरम पानी से ही संतोष नहीं कर लेना चाहिये। अधिक गर्म पानी 12 घंटे तथा उबला पानी 24 घंटों तक प्रासुक रहता है। गरम करने या लोंग डालने में भी छाना पानी ही प्रयोग में लाना चाहिये।

बहते हुए स्वच्छ पानी को तथा ऐसे पानी को जो सूर्य के प्रकाश के सीधे सम्पर्क में आता है, भी प्रासुक माना जाता है। विशेष परिस्थितियों में इसे भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

कहीं कहीं चावल या चने के धोने में प्रयुक्त जल को भी प्रासुक कहा गया है, क्योंकि उस पानी के स्वाद रंग तथा गंध में अन्तर आ जाता है, लेकिन सामान्यतः इस प्रकार के जल को अब कोई ग्रहण नहीं करता है।

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

यह देखकर आश्चर्य होता है कि हमारे जैनाचार्यों को अध्ययन तथा उनकी अनुभूति कितनी गहन थी। पानी की बूँद में भी असंख्य जीव हो सकते हैं, यह बात कितनी निराली है। आज हम सभी जानते हैं कि पानी की एक बूँद में 10^9 - 10^{10} से भी अधिक बैक्टीरिया हो सकते हैं। इसी बात को समझाने के लिए जैनाचार्यों ने कहा कि पानी की एक बूँद में इतने जीव होते हैं कि यदि वे कबूतर से बराबर होकर उड़ें तो जम्बूद्वीप लबालब भर जाए। यदि इस गोल पृथ्वी को थोड़ी देर के लिए जम्बूद्वीप के बराबर मान लें तो जैनधर्मानुसार पानी की एक बूँद में करीब 10^{17} जीव होने चाहिये।

लोंग, हरड़े या जीरे से भी जल को जीव-मुक्त किया जा सकता है, यह भी वैज्ञानिक है। लोंग आदि बैक्टीरिया-रोधक हैं। यदि इन्हें पानी में डाल दिया जाए तो बैक्टीरिया की वंशवृद्धि नियन्त्रित होती है। पानी को सूर्य के सीधे प्रकाश में रखने की बात कही गयी है, वह भी पूर्णतः वैज्ञानिक है। हम सभी जानते हैं कि सूर्य के प्रकाश में अल्ट्रावायलेट (पराबैंगनी) किरणें होती हैं, जो बैक्टीरिया को नष्ट कर देती हैं। इसी प्रकार यह भी सत्य है कि बहते हुए पानी में बैक्टीरिया अपनी कॉलोनी नहीं बना पाते हैं, अतः बहते हुए जल को भी प्रयोग में लाया जा सकता है, लेकिन चूँकि नदी का पानी प्रायः प्रदूषित ही रहता है, अतः सीधे प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है।

पेयजल-संबंधी जीव-मुक्त प्रासुक जल की जैन अवधारणा एक विशेषता लिये हुए भी है। नगरपालिका द्वारा सप्लाई किये जाने वाले पानी में मात्र एक बात का ध्यान रखा जाता है कि पानी जीव-मुक्त हो जाए, ऐसा करने में यदि जीव मरते हैं तो उस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता है, जबकि जल-गालन तथा प्रासुक करने की जैन प्रक्रिया में इस बात का भी ध्यान रखा जाता है, कि जल को प्रासुक करने में जीवों की विराधना कम से कम हो। प्रासुक करने की इस विधि में जीव-दय प्रमुख हो जाती है।

Q. सृष्टि की रचना किसने की? मनुष्य की उत्पत्ति कैसे हुई? क्या भगवान पूर्ण है?

शिखा जैन, मुरैना

A. सृष्टि शाश्वत है उसकी रचना किसी व्यक्ति ने नहीं की है। सृष्टि जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल इन छः द्रव्यों के द्वारा निर्मित है। यह छः द्रव्य शाश्वत हैं; इसलिये सृष्टि भी शाश्वत है। इसी तरह मनुष्य की रचना भी किसी ने नहीं की, वह अपने कर्मों के द्वारा ही अपना निर्माण करता है, नाम कर्म के उदय से शरीर की रचना होती है, आयुर्कर्म द्वारा आयु मिलती है। गोत्र कर्म द्वारा गोत्र मिलता है। वेदनीय कर्म के द्वारा सुख-दुःख का अनुभव होता है। अन्तराय कर्म का उदय हमारे कार्यों में बाधक बनता है। ज्ञानावर्णी कर्म हमारे ज्ञान के कम-ज्यादा होने का कारण है। दर्शनावर्णी कर्म द्वारा हमारी इन्द्रियों को स्पर्श आदि की क्षमता प्राप्त होती है तथा मोहनीय कर्म हमारी श्रद्धा और आचरण को विकृत करता है। इस प्रकार मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा स्वयं ही निर्मित है। इसी प्रकार अन्य जीव भी अपने-अपने कर्मों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

जैन धर्म के अनुसार जो संसार से मुक्त शुद्ध आत्मा है उन्हें भगवान कहते हैं। तीर्थंकर, माता के द्वारा जन्म लेकर अपनी आत्मा को जन्म-मरण से मुक्त करके परमात्म अवस्था को प्राप्त करते हैं। इसलिये उन्हें ही जैन धर्म में भगवान माना है और ऐसे ही तीर्थंकरों की प्रतिमा जैन मंदिर में स्थापित की जाती है। तीर्थंकर के अलावा भी आत्मा परमात्म अवस्था को प्राप्त करती है, वे भी भगवान कहलाती हैं। इस प्रकार तीर्थंकर पृथ्वी पर जन्म लेकर अपने पुरुषार्थ के द्वारा जन्म-मरण से मुक्त परमात्म अवस्था प्राप्त करते हैं।

Q. मृत्यु के बाद आत्मा कहाँ चली जाती है?

शिखा जैन, मुरैना

A. मृत्यु के बाद आत्मा अपने आयुर्कर्म के अनुसार निर्धारित स्थान पर जन्म लेती है और अपना आगे का जीवन व्यतीत करती है।

Q. भगवान की मूर्ति को रूप देना कहाँ तक सार्थक है?

शिखा जैन, मुरैना

A. भगवान का रूप वीतराग है इसलिये वीतरागता को प्राप्त करने वाली उनकी आकृति बनाकर जैन धर्म में पूजा जाता है। यह साकार पूजा कहलाती है। भगवान निराकार सिद्ध अवस्था को प्राप्त हो गये हैं, पर हम अपनी सुविधा के लिये उनके वीतराग रूप को मूर्ति बनाकर पूजते हैं। मूर्ति पूजन का उद्देश्य मूर्तिवान को पूजना है, जिसके माध्यम से हम उनके जैसा बनने की भावना करते हैं।

Q. सामाजिक बुराइयों, भ्रष्टाचार, हिंसा को मिटाने के लिये छात्रों को कैसे कदम उठाने चाहिये?

शिखा जैन, मुरैना

A. सामाजिक बुराइयों के लिये समाज का प्रत्येक व्यक्ति जिम्मेदार है इसलिये व्यक्ति को अपना जीवन अच्छा बनाना चाहिये। व्यक्ति यदि हिंसा और भ्रष्टाचार से स्वयं बचने की कोशिश करे तो समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर कर सकता है।

Cherity begins at home. हमारे अपने चरित्र का ही प्रभाव समाज पर पड़ता है। इसलिये अपना चरित्र अच्छा बनायें और बुराइयों से बचते रहें तो समाज का सुधार अपने आप होगा।

Q. हम बाजार से भगवान की तस्वीर खरीदें और उसे श्रद्धा सहित पूजें या ग्रहण करें, तो हम यह ईश्वर की वास्तविक भक्ति कर रहे हैं?

नेहा जैन, गुना

A. भगवान की भक्ति किसी तस्वीर या लॉकेट को पूजने पर निर्भर नहीं है। भगवान की भक्ति तो अपने मन की पवित्र भावना पर निर्भर है। तस्वीर या लॉकेट अपनी भावनाओं को पवित्र करने में कारण मात्र बनता है। इनके माध्यम से यदि हम अपनी भावनाओं को पवित्र बनाते हैं, तो वह भी भगवान की भक्ति कहलायेगी। परन्तु भगवान की भक्ति करने के लिये जैनधर्म में मंदिरों का निर्माण किया गया है। जहाँ तीर्थंकर की प्रतिष्ठित प्रतिमा स्थापित की जाती है। जिनके माध्यम से पूजा-आराधना

के द्वारा भगवान की भक्ति करते हैं। वास्तव में इन प्रतिमाओं के माध्यम से अपने भाव अच्छे बनते हैं। यही मंदिर का महत्व है।

Q. भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म? मोनिका जैन

A. हमारा वर्तमान में किये जाने वाला पुरुषार्थ ही आगामी समय में हमारा भाग्य बन जाता है। जैसे दायों कदम आगे बढ़ाने पर बायाँ कदम उसका अनुसरण करता है। इसी प्रकार हमारा जीवन है। इसमें पुरुषार्थ के दायें कदम और भाग्य के बायें कदम से जीवन चलता है। हम अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य को बदल सकते हैं। इसलिये पुरुषार्थ ही श्रेष्ठ है। भाग्य भरोसे बैठने वाले को जो चीज प्राप्त होनी थी, वह भी प्राप्त नहीं होती।

एक राज्य में महामंत्री वृद्ध हो गये थे, अतः राजा को नये मंत्री की तलाश थी। राजा चाहता था कि नया मंत्री पूर्व के मंत्री के समान बुद्धिमान, दक्ष और पारंगत हो। राजा ने घोषणा कराई कि जो भी इस पद का दावेदार है उसे छोटी-सी परीक्षा देनी होगी। तीन नाम मंत्री पद हेतु आये। राजा ने तीनों से कहा कि आपको अलग-अलग कमरों में बंद किया जायेगा, आपको उनसे बाहर निकलना है। पहला व्यक्ति कमरे में चुपचाप सो जाता है, वह सोचता है जब राजा ने बाहर से बंद करवाया है तो उसे कौन खोल सकता है। दूसरा व्यक्ति कमरे में बैठा चिंतन करता रहा कि क्या करें, कैसे करें। उसने कोई प्रयास नहीं किया। तीसरे व्यक्ति ने सोचा कि कमरा बाहर से बंद जरूर है, पर निकलने का भी कोई न कोई रास्ता जरूर होगा। मुझे प्रयास करना चाहिये। उसने उठकर दरवाजा खींचा तो वह आसानी से खुल गया, क्योंकि दरवाजा बाहर से बंद नहीं किया गया था।

Q. महाराज जी खड़े होकर आहार क्यों लेते हैं?

मोनिका जैन

A. खड़े होकर आहार लेना साधु का मुख्य मूलगुण है, इससे आहार में होने वाले कई अंतरायों को जीता जाता है। खड़े होकर आहार लेने में

आहार से तृप्ति नहीं होती। मुनिमहाराज अतृप्ति को जीतते हैं। बैठने की अपेक्षा खड़े होकर आहार कम ग्रहण किया जाता है। खड़े होकर आहार लेने में आलस पर विजय प्राप्त की जाती है। मुनि महाराजजी अपने जीवन में तब तक आहार ग्रहण करते हैं जब तक उनके पैरों में खड़े होने की शक्ति है जब पैरों में खड़े होने की शक्ति नहीं रहती तब भोजन त्याग करके सल्लेखना ग्रहण कर लेते हैं। इन सब कारणों से मुनि महाराज खड़े होकर आहार ग्रहण करते हैं।

Q. यदि किसी के मन में धर्म के प्रति श्रद्धा है और वह अपनी आत्मा में भगवान को पास मानता है तो क्या उसे मंदिर जाकर ऊपरी दिखावा करने की जरूरत है। मोनिका जैन

A. वास्तव में मन में ही धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा होना ही धर्म है और धर्म धारण करने वाले के अंदर भगवान या वीतरागता निवास करती है। लेकिन सच्ची श्रद्धा और वीतरागता को अभिव्यक्त करने के लिये भगवान के मंदिर में जाकर मूर्ति का आलम्बन लिया जाना आवश्यक होता है। मूर्ति के माध्यम से हम भगवान के जैसे बनने की कामना करते हैं।

इसलिये हम उसे आडंबर या दिखावा नहीं कह सकते। वहीं दूसरी ओर जो लोग आडंबर और दिखावा तो करते हैं पर उनके जीवन में वीतरागता नहीं आती उनका जीवन निरर्थक है। हमें अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिये मंदिर या भगवान के सम्मुख अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हुये उनके जैसे बनने की भावना करनी चाहिये।

Q. मैं यह जानना चाहती हूँ कि बैंगन और फूलगोभी जैसी सब्जियाँ जमीन के ऊपर लगती हैं, फिर इन्हें खाने में दोष क्यों माना जाता है? मोनिका जैन

A. जमीन के भीतर होने वाली सब्जियाँ तो दोषयुक्त हैं ही लेकिन जमीन के ऊपर होने वाली सब्जियाँ भी दोषमुक्त नहीं हैं। बैंगन और फूलगोभी में हिंसा अधिक है, यही दोष है। फूलगोभी में प्रयोग के द्वारा मालूम हुआ कि छोटी-छोटी जीव राशि फूल के बीच में पायी जाती है। जो कि उसी रंग के होने के कारण दिखाई भी नहीं देती हैं। बैंगन की सब्जी दिखने में भी मांसाहार जैसी दिखती है। साथ ही बैंगन में उसे पकाने के लिये कच्ची अवस्था में ही एक कीड़ा उसके डंठल के पास से प्रवेश करता

है। इसलिये जीवराशि सुरक्षा के लिये इन सब्जियों का प्रयोग निषेध किया गया है। ये दोनों सब्जियाँ तामसिक आहार में भी गिनी जाती हैं। इसलिये इनका प्रयोग जीवन को सात्विक बनाने वाला नहीं कहा जाता है।

Q. क्या जैनधर्म के अनुसार मरणोपरान्त किसी भी अंग का दान देना गलत होता है? जबकि किसी और का जीवन इससे अच्छा हो सकता है तो क्या गलत है? मोनिका जैन

A. जैन धर्म किसी भी अंग का दान अलौकिक दान नहीं मानता है। इससे परमार्थ नहीं बनता और हमारा आत्मकल्याण नहीं होता क्योंकि यह हिंसा दान है। लेकिन किडनी, आँख, ब्लड डोनेशन या रक्तदान आदि को लौकिक दान माना गया है। इसलिये इसे करुणा दान मानकर देने का जैनधर्म में निषेध नहीं है, परोपकार के लिये अपने शरीर के विभिन्न अंग या रक्त का दान करना गलत नहीं है।

आपको यदि किसी भी विषय में कोई भी शंका है तो आप अपना प्रश्न हमें भेज सकते हैं। मुनिश्री द्वारा उत्तर दिया जायेगा। यथासम्भव उसे प्रकाशित करने की कोशिश करेंगे।

अनुभूति

I received the certificate and the medal along with lots of blessings from Munishri and the Maitree Smooh. As receiving the post, I got carried away into the memories of the YJA-2004 ceremony. I was then there as an awardees for class 10th. I feel honored on receiving the again.

- Siddharth Godha

I received a valuable and prestigious certificate and medal of Young Jaina Award 2006. I am glad to be a part of Matri Samooh and excited to receive Chirping Sparrow.

- Meena Jain

यंग जैना अवार्ड पाने का सौभाग्य मुझे दो बार प्राप्त हुआ। आज भी जब समारोह की याद आती है तो मन प्रसन्नता से भर जाता है। जब कभी अपने मित्रों को इस सम्मान के बारे में बताता हूँ, तो गर्व का अनुभव करता हूँ। चाहे वह रामगंजमंडी का समारोह हो या मुरैना का, सारे आयोजन अविस्मरणीय थे। कार्यकर्ताओं की शालीनता व विनम्रता देखते ही बनती है। इतने सारे प्रांतों से आए हुए छात्र-छात्राओं से मिलना अपने अनुभवों को बाँटना एक सपना सा लगता है। समारोह के तीन दिन कितने जल्दी बीत जाते हैं, पता ही नहीं चलता। मुनिश्री को आहार देने का सौभाग्य तो विरले ही लोगों को मिल पाता है, ये जरूर मेरे पूर्व पुण्य कर्मों का फल है कि मुझे ये सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुनिश्री के अनमोल वचन प्रतिपल मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। यह सम्मान समारोह युवा पीढ़ी की भव्य योग्यता और मेधावीजनों की प्रतिभा पर समाज के

गर्व और गौरव की अभिव्यक्ति है।

- पारूलराज जैन, इन्दौर

मुझे जबसे मैत्री समूह द्वारा यंग जैना अवार्ड सम्मानित किया गया है, तब ही से अपने आप बहुत गौरान्वित महसूस करती हूँ। तब से आज तक मैंने सफलता ही पायी है और अब मैं I.A.S. की तैयारी कर रही हूँ। आप लोग हमें I.A.S. की तैयारी के लिए मार्गदर्शन दें, मैं हमेशा आभारी रहूँगी। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं इस परीक्षा में सफल होऊँ इसलिए मैं इतनी मेहनत कर रही हूँ।

- अभिलेखा जैन, इन्दौर

वंदन करती हूँ मैत्री समूह परिवार का जिनके सानिध्य में हुआ प्रतिभाओं का एक अनूठा सम्मान आया है। मैं भी मेरे स्मृति पटल पर अंकित है और मैं कामना करती हूँ कि यह प्रोग्राम भविष्य में भी होता रहे और मैं इसके लिए हृदय से आप सभी का आभार व्यक्त करती हूँ।

- कामनी जैन

YOUNG JAINA AWARD - 2006



आज युवा अपने कैरियर के प्रति जागरूक हो रहे हैं, यह अच्छी बात है, लेकिन यदि वे पढ़ाई के साथ नैतिक मूल्यों से संपन्न इंसान बनें तो उनकी यह सफलता कहीं ज्यादा बेहतर सफलता है। युवा वर्ग जितना अपने कैरियर के प्रति सावधान है, गंभीर है, उतना ही जीवन के प्रति जागरूक रहे। जीवन में सहजता, सरलता और संवेदनशीलता सतत बनी रहे, यही शिक्षा का मूल्य है।

ऐसी नई पीढ़ी के निर्माण के मनोभाव से मुनिश्री क्षमासागर जी का आशीर्वाद पाकर प्रतिभा को विकसित एवं समृद्ध करने का प्रयास मैत्री समूह यंग जैना अवार्ड के रूप में करता है। प्रतिभा सम्मान समारोह में नई पीढ़ी अनुभव करती है कि उसकी पीठ थपथपाने वाले धर्म और समाज को उसकी चिंता है। निश्चित ही यह अनुभव उसे धर्म और समाज के प्रति प्रतिबद्ध बनायेगा।

वर्ष 2006 यंग जैना अवार्ड का लगातार सफलतम 6ठा वर्ष है। म.प्र. के शिवपुरी में भगवान महावीर स्वामी की 2600वीं जन्म जयंती के अवसर पर प्रथम बार यह समारोह आयोजित किया गया। पूरे देश के 12वीं कक्षा के लगभग 250 प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को सम्मानित करने वाला कार्यक्रम धीरे-धीरे अपने स्वरूप को परिपक्व करता गया। वर्ष 2002 में जयपुर (राज.), 2003 में रामगंजमण्डी (राज.), 2004 में अशोकनगर (म.प्र.), 2005 में मुरैना (म.प्र.) में प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

वर्ष 2006 में 12वीं साइंस में 80 प्रतिशत आर्ट एवं कॉमर्स में 75 प्रतिशत एवं 10वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक अर्जित करने वाले देश के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को यंग जैना अवार्ड-06 के लिये निमंत्रित किया गया। पूर्व के वर्षों में अवार्ड पाने वाले विद्यार्थियों को उनकी स्नातक डिग्री पूरी होने या अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम में चयनित होने पर पुनः सम्मानित किया गया।

वर्ष 2006 ऐसा वर्ष है जब प्रतिभावानों को उनके घर पर ही सम्मानित किया गया। कुछ कारणों से मुनिश्री के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन नहीं हुआ। परन्तु उनका प्रेरक मार्गदर्शन और

शुभाशीष सदा प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं के साथ है। यंग जैना अवार्ड की गरिमा और उत्कृष्टता को बरकरार रखते हुये मैत्री समूह ने सभी प्रतिभाओं को बुकलेट के साथ मेडल और सर्टिफिकेट से सम्मानित किया।

इस वर्ष 12वीं एवं 10वीं की 1198 प्रविष्टियों में से 671 छात्राओं और 527 छात्र के आवेदन प्राप्त हुये।

12वीं कक्षा के कुल 356 छात्र-छात्राओं में से साइंस बॉयज में रोहित जैन, आगरा ने 97.50 प्रतिशत एवं साइंस गर्ल्स में मेघा जैन, छतरपुर ने 94.88 प्रतिशत (Normalize Percentage) के साथ प्रथम स्थान पाया।

रोहित जैन, आगरा; आकाश जैन, मैनपुरी; विवेक जैन, लखनऊ; नीरव बरोला, उदयपुर; सुलभ जैन, जयपुर; विदित जैन, अहमदाबाद; आशिका जैन, भीलवाड़ा; विशाल जैन, शहडोल ने 12वीं कक्षा में अच्छे अंकों के साथ आई.आई.टी. में चयनित होने में सफलता हासिल की।

इस वर्ष 12वीं के साथ ही पुनीत जैन, जयपुर; कीर्ति जैन, अजमेर; सुजय जैन, आगरा का चयन बी.आई.टी.एस., पिलानी में हुआ।

रोमिल बरकारी, कारंजा ने 93.83 प्रतिशत के साथ बॉयोलाजी में 100 प्रतिशत

अंक हासिल किये और पी.एम.टी. में भी चयनित हुये। अतिशल जैन, कोलकाता; रिमझिम जैन, जयपुर; चार्मी पारेख, जूनागढ़; खुशबू जैन, अहमदाबाद; निभा जैन, बड़ोदरा; शाह अभिषेक, सूरत; प्रियंका श्रावने, नागपुर; आकांक्षा जैन, जयपुर; मागिया कोमल, भावनगर; पारूल जैन, हिसार; खुशबू शाह, बड़ोदरा; अर्पन जैन, नीमच; अंकुर पाटनी, मंदसौर; अंकित जैन, भोपाल; अतुल जैन, कोतमा ने 12वीं कक्षा में अच्छे अंकों के साथ सी.पी.एम.टी./पी.एम.टी. में चयनित होने में सफलता पाई।

12वीं कक्षा में कॉमर्स ग्रुप में कुल 303 छात्र-छात्राओं में से बॉयज में मंदसौर के सौरभ बड़जाते ने 93.11 प्रतिशत एवं गर्ल्स में मेघा जैन, दमोह ने 92.88 प्रतिशत (Normalize Percentage) के साथ प्रथम स्थान पाया।

आर्ट्स ग्रुप में केशु जैन, बामनपुरा ने 88 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान पाया।

10वीं कक्षा के कुल 487 जैन छात्र-छात्राओं में से बॉयज में अभिनव जैन, जयपुर ने 98.20 प्रतिशत और गर्ल्स में अंकिता जैन, दिल्ली ने 96 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान पाया।

Young Jaina Award 2006

Few Milestones

Winners

Science Faculty



Rohit Jain
Agra



Megha Jain
Chhatarpur

Commerce Faculty



Sourabh Badjatya
Mandsaur



Swati Jain
Damoh

Art Faculty



Keshu Jain
Bamanpura



Tapish Jain
Udaipur

X Standard



Abhinav Jain
Jaipur



Ankita Jain
Delhi

Stars

IIT - JEE



Sulabh Jain
Jaipur



Anshika Jain
Bhilwara

CPMT



Ankit Jain
Bhopal



RimJhim Jain
Jaipur

AIEEE



Rohit Jain
Agra



Kriti Jain
Ajmer

PMT



Parul Jain
Hisar



Nibha Jain
Vadodara



Atul Kumar Jain
Kotma

PET



Prateek Khasgiwala
Indore



Paridhi Jain
Bikaner



Neerav Barola
Udaipur

Out Standing Performers



Gaurav Jain

Lalitpur

- Udyan Smriti Patrakarita Samman
- The Best Basic Innovation Information Award



Dr. Kusum Shah

Udaipur

- Ph.D. in Music



Dr. Namrata Jain

Bhopal

- Ph.D. in Agronomy



Sonal Jain

Hoshangabad
Scientific Officer
Dr. Homi Bhabha Gold Medal



Namit Jain

Pune

- Handicapped
- 91.06% in X
- 12th Rank in State Talent Search Exam
- Indian Institute of Science Scholarship



Prayas Jain

Sonkatchh

- Handicapped
- 70% In X



Vasu Jain

Meruth

- Bravery Award



Abhishek Jain

Meruth

- Bravery Award

TOP TEN POSITION ACHIVERS

XII-SCIENCE

Boys



Akash Jain
Mainpur
97.00%



Vivek Jain
Lucknow
96.75%



Romil Warkari
Karanja
93.83%



Tushar Jain
Tarapur Bosar
93.83%



Atishay Jain
Dehradun
93.60%



Shah Abhishek
Surat
93.00%



Jivraj Padiwal
Aurangabad
92.83%



Sanveg A Harsule
Washim
92.66%



Dharam Chand Jain
Hyderabad
92.60%



Neerav Barola
Udaipur
91.80%

Girls



Mamatha Jain
Hyderabad
95.71%



Akshita Sunil Jain
Mumbai
94.33%



Shefali Sujay Dodal
Chandrapur
94.17%



Rimjhim Jain
Jaipur
94.00%



Charmy S Parekh
Junagadh
93.60%



Khushbu Jain
Ahmedabad
93.60%



Nibha Jain
Vadodara
93.40%



Kala Nidhi Sanjay
Selu
92.50%



Ruchi Jhonsa
Delhi
92.20%



Naincy Jain
Ganjbasoda
92.00%

XII-COMMERCE

Boys



Prateek Jain
Pondicherry
94.16%



Pushpak Jain Bakliwal
Durg
92.60%



Jain Amit Tejkar
Ichal Karanji
92.00%



Shreyansh Jain
Ajmer
92.00%



Kunal Jain
Dhuliyan
91.80%



Ankur Jain
Kolkata
91.50%



Pratik P. Ekhande
Solapur
91.00%



Vikky Jain
Nalbari
90.83%



Rattan Jain
Hisar
90.80%



S. Ajeeth Doss
Chennai
89.50%

Girls



S. Sulekha Bai
Pondicherry
97.75%



N. Sonali Jain
Pondicherry
95.91%



Swati Jain
Kolkata
93.20%



Coral Jain
Jaipur
92.80%



Kavita Jain
Ujjain
92.80%



Sangeetha Jain
Hyderabad
92.30%



R. Sinduja
Kodambakkam
91.75%



Nidhi Shah
Jaipur
91.40%



Nidhi Jain
Ranchi
91.00%



Neha Jain
Kota
90.80%

Achivements

Senior Awardees of YJA 2002-03 Now Graduates

IIT



Vipul Badjatya
Indore
B. Tech.
Gold Medallist



Piyush Jain
Vidisha
B.Tech.



Sourabh Jain
Tikamgarh
B. Tech.
Selected for MS-Ph.D
at Uni. of Minnesota



Rajat Jain
Indore
B. Tech.

B.E.



Ankur Jain
Vidisha
B.E.
State Taiqvando (Bronze)



Nitika Luhadiya
Khategaon
B.E.
1st in College



Sourabh Jain
Ujjain
B. E.
1st in College

M.B.B.S./B.Pharm.



Manisha Jain
Shivpuri
M.B.B.S.



Piyush Jain
Sagar
B.Pharm.



Smriti Jain
Raghogarh
B.Pharm.

B.Sc.



Priyanka Jain
Sagar
B.Sc.
1 in Univ. (Gold Medalist)



Nupur Jain
Bhilwara
B.Sc.



Anu Bajj
Dewas
B.Sc.



Shilpi Banzal
Ashoknagar
B.Sc.

B.A./B.Com.



Neha Kala
Jaipur
B. Mus.



Shashi Jain
Khanpur
B.A.



Kirti Jain
Indore
B.Com
University Topper



Shivali Shah
Jaipur
B.Com.

Achievers

Awardees of YJA 2005 Selected in Professional Courses 2005



Siddharth Jain
Sagar
IIT & AIEEE



Aditya Jain
Indore
IIT



Anupriya Jain
Gwalior
IIT & AIEEE



Sapan Jain
Hoshangabad
BITS PILANI



Tridoshanjay Jain
Satna
AIEEE & PET



Megha Jain
New Delhi
CEE



Anshul Jain
Jaipur
CA-PE 1



Yashasvi Jain
Jaipur
CA-PE 1



Mallika Bothra
Ramganjmandi
CPMT



Sourabh Jain
Bhilai
CPMT & CGPMT



Ashish Jain
Lalitpur
CPMT



Shilpa Pandiya
Guna
CPMT



Ankita Jain
Lucknow
UPPMT



Akanksha Jain
Bhopal
NIFT

TOP TEN POSITION ACHIVERS

XII-ARTS



**Aashina
Ganaur**
87.60%



**Parul Badkul
Patera**
87.11%



**Priyanka Jain
Damoh**
86.20%



**Sonam Jain
Chhapara**
86.20%



**Neelam Gandhi
Singoli**
84.68%



**Shweta Jain
Bamanpura**
84.22%



**Sneha Jain
Gajsinghpur**
83.38%



**Akanksha Singhai
Sironj**
83.10%



**Pooja Jain
Nandgaon**
81.67%



**Sonal Jain
Banswara**
81.23%

X-CLASS

Boys



**Vivek Jain
Patna**
96.20%



**Naman Luhadiya
Jaipur**
95.20%



**Abhimanyu Kasliwal
Mumbai**
94.33%



**Samkit Jain
Damoh**
94.02%



**Sanskar Jain
Morena**
94.00%



**Shobhit Jain
Calactta**
93.66%



**Aakash Jain
Bhopal**
93.60%



**Pramyesh Basall
Jaipur**
93.40%



**Dongaonkar S.Sanjay
Deolgaon-Raja**
93.20%



**Kanishka Jain
Kankroli**
92.80%

Girls



**Shraddha Batavia
Bhavnagar**
95.14%



**Sonal Jain
Hazaribagh**
94.80%



**Priyanka Jain
Tarapur, Boisar**
94.60%



**Surbhi Jain
Damoh**
94.20%



**Ruchita Pandya
Jaipur**
94.20%



**Nancy Jain
Damoh**
94.00%



**Riddhi G.Chokshi
Ankleshwar**
94.00%



**Rinku Jain
Village Baghera**
94.00%



**Pradnya Gangwal
Deharoad**
93.60%



**Nikita Kothari
Beawar**
93.40%

Anger / Forgiveness

Anger (Krodha) is one of our most common weaknesses (Kashāya). We feel angry when we do not get what we want or when we are hurt because of what someone said or did. Can anger be eliminated? Anger can be difficult to eliminate, however its expression can be controlled. Everyone has the capacity to control their behaviour if they really choose to.

For example, an adult is speeding on the expressway and yelling at the person in front of them for being too slow! A police officer stops the adult for speeding. What will the adult do? Will they get angry at the police and scream at him? Or even though they are upset at being caught speeding will they speak very politely and respectfully? A person who was angry earlier can become very polite as soon as they face a situation that they need to be calm in!

As a child you may complain about another child who takes away your toy or pencil and you may fight with that child. But if you are called to the Principal's office would you get angry and fight with the child there, or would you talk politely to the Principal?

We tend to get angry in many unwarranted situations and with people who care about us and who will put up with our behaviour. If we become



sensitive to this we can avoid life long scars and not hurt family and friends that we care for the most.

According to Jain Philosophy, the way to eliminate anger is by replacing it with "forgiveness".

A teacher once told each of her students to bring a clear plastic bag and sack of apples to school. For every person they refused to forgive in their life's experiences they had to choose an apple, write the name of the

person and date on it, and put it back in the plastic bag. Some of their bags became quite heavy within a few days.

Then they were asked to carry this bag with them everywhere for one week. They had to put it beside their bed at night, on the seat next to them in the car, next to their desk at school. They even had to take it with them to their friends' houses.

The hassle of lugging this sack everywhere with them made it clear what weight they were carrying. They had to pay attention to it all the time and not forget it by leaving it in embarrassing places. Naturally, within a couple of weeks the apples became rotten and it turned into a nasty, smelly slime. This in turn made them unpleasant company. It did not take long for each of the students to figure out that getting rid of the apples was much more important than carrying them around.

This is a great metaphor for the price we pay for keeping our anger and pain!

Too often we think of forgiveness as a gift to the other person.

Forgiveness is clearly for us!

WOUND WILL STILL BE THERE

A little boy had a bad temper. He frequently had fights with his siblings and friends. His parents would receive many complaints about the behaviour from school and friends. His parents thought long and hard of helping him understand that anger is not good. Finally, his parents came up with an idea.

His father took him to the fence in the backyard and gave the boy a hammer and a bag of nails. His father told him that every time he lost his temper he must hammer a nail into the fence. The first day the boy had to drive 27 nails into the fence!

Over the next few weeks, as he learned to control his anger, the

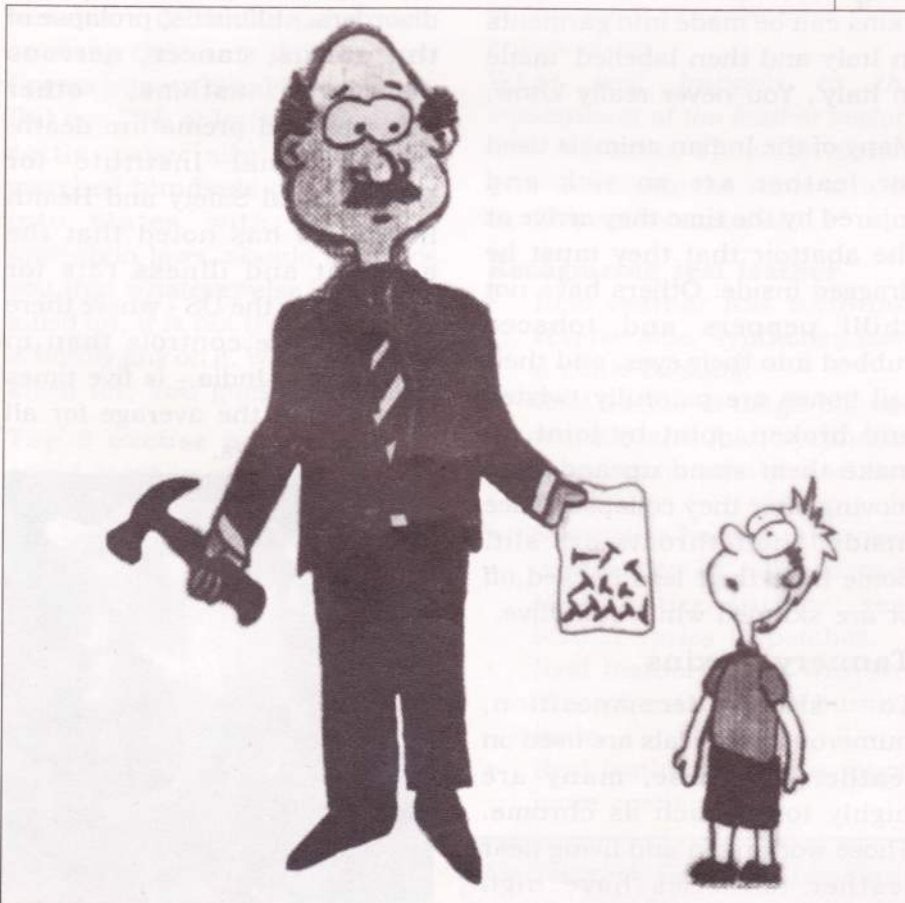
number of nails that he needed to hammer in daily gradually went down. He discovered that it was easier to hold his temper than to walk to the fence, and drive those nails in.

Finally, the day came when the boy did not lose his temper at all. He told his father about it and his father suggested that he should now pull out one nail for each day that he was able to hold his temper. The days passed and the young boy was finally able to



tell his father that all the nails were gone. He could now control his temper and not get angry about anything!

The father took his son by the hand and led him to the fence. He said, "You have done well, my son, but look at the holes in the fence. The fence will never be the same. When you say things in anger they leave a scar just like these nails did. It does not matter how many times you say "I am sorry", the wound will still be there. A verbal wound is as bad as a physical one. Friends are very rare jewels indeed. We should never hurt them.



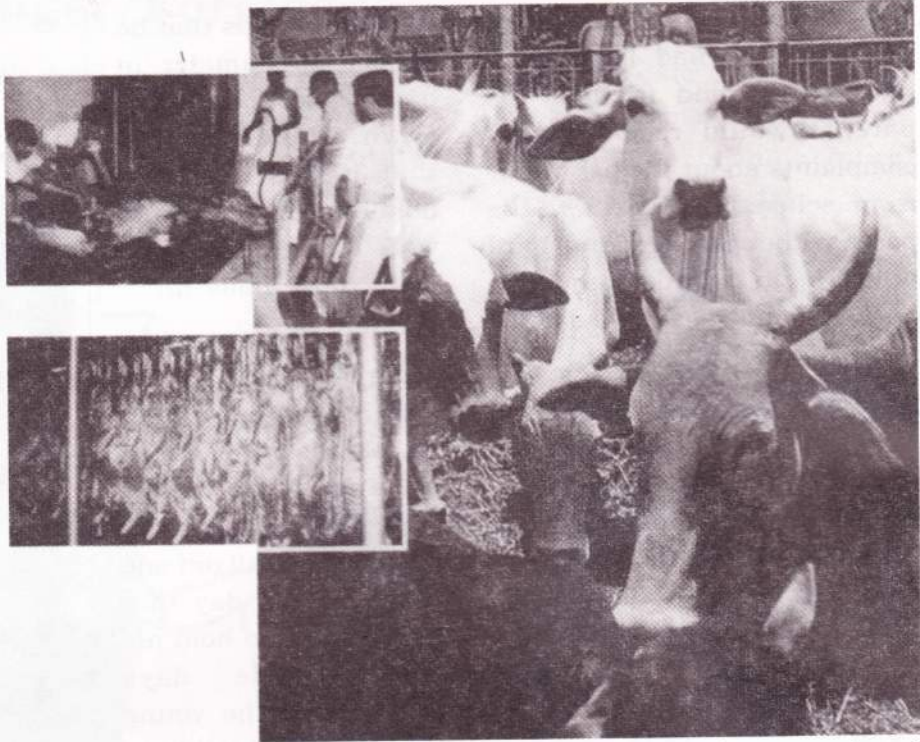
WHAT IS WRONG WITH LEATHER?

In India, leather, referred to as a 'Co-product' of the meat industry by the Indian Council of Agricultural Research, is actually valued more as an export than meat is. Buying leather directly supports the cruelty of the transport of the animals and the misery of the abattoir. When dairy cows' milk production wanes, their skin is also made into leather, and their offspring are often poisoned or starved in order to be used for high-priced calfskin.

Almost all the animals who end up as belts and shoes suffer confinement, crowding and cruel treatment during transportation and slaughter, and many also suffer unanaesthetised castration, tail-docking and de-horning.

Who is in your shoes

Most leather is made from the skins of cows, buffaloes, goats and sheep, but leather is also made from horses, pigs, alligators, snakes and other animals, as well as from dogs and cats killed in some parts of Asia. When you buy leather, you cannot tell where it came from or what animal it was made from. Dog skin will not be labelled



'dog', for example, and Indian skins can be made into garments in Italy and then labelled 'made in Italy'. You never really know.

Many of the Indian animals used for leather are so sick and injured by the time they arrive at the abattoir that they must be dragged inside. Others have not chilli peppers and tobacco rubbed into their eyes, and their tail bones are painfully twisted and broken, joint by joint, to make them stand up and keep moving after they collapse. Once inside, their throats are slit. Some have their legs hacked off or are skinned while still alive.

Tannery Toxins

To stop decomposition, numerous chemicals are used on leather. Of these, many are highly toxic, such as chrome. Those working in and living near leather tanneries have high

incidences of menstrual disorders, stillbirths, prolapse of the uterus, cancer, nervous disorders, asthma, other illnesses and premature death. The National Institute for Occupational Safety and Health in the US has noted that the accident and illness rate for tanneries in the US - where there are far more controls than in tanneries in India - is five times higher than the average for all other industries.



Common myths about Genuine Leather

Whether used as a fashion statement or as a perceived need, whether used for making sofa covers or shoes, today leather is made from the skin of a butchered animal's back.

Did you say butchered? But doesn't leather come from animals, which die a natural death?

One who runs a shoe business on raw material supplied that way, he realize how mythical such hide-collection is, nowadays, 99% of all leather today comes from slaughterhouses.

But what's wrong with using it? It is only a by-product of the meat industry, isn't it? It is not being killed for the skin, right?

Well, what it is being killed for remains a debatable point, with so many claimants dipping their fingers into its blood for its parts. But one look at India's emaciated cattle, especially those being marched hundreds of kilometers into states with no cattle protection laws, should convince you that whatever else it is being killed for, it is not the flesh, there is hardly any on it. What is it being killed for, You guessed it; hide.

Top 5 excuse people give to avoid leather alternatives

Synthetic alternatives are not easily available

Our response: Walk into any shoe store and ask for non-leather footwear.

Other materials don't 'breathe' as well as leather does

Our response: the other materials let the cow breathe, which the leather doesn't. And materials like canvas or corduroy do 'breathe' perfectly.

Canvas or corduroy don't look as polished as leather.

Our response: Looks 'polished' to have killed an animal? And sloppy to have chosen the ahimsak alternative? It is all in the viewer's attitude.

Synthetic alternatives are not environment- friendly.

Our response: Like the leather tanneries are? Leather production



Who is the guiltiest of them all?

is the worst offender of a clean environment.

What will happen to the employment of the leather sector?

Our response: They can switch over to making the same articles in alternative material.

Recognizing real leather

- Real leather has a fibrous reverse side, synthetics have a cloth backing.
- Real leather is tough but can wrinkle and fold; synthetics tear more easily and are brittle.
- Synthetics have an unbroken uniformity in pattern over their entire surface; real leather varies in patches.
- Real leather burns with the characteristic smell of burning hair.
- Real leather is always much more costly.

Leather subsidized meat

If we did not use leather and other 'by products,' flesh would cost the meat-eater more per kilogram. That is meat would become costlier or the butcher's business would become less profitable. Either outcome devoutly to be desired. Leather usage makes meat consumption more affordable. If we want less people to eat meat, let us give up using leather.

What you can do

- Never buy leather. It is easy to find quality shoes and accessories that are stylish and free of animal suffering at designer and high-end stores such as Rinaldi Designs or at retail chains such as Metro and Bata. Many shops and street stalls also carry a wide selection of non-leather styles made from materials such as cotton, linen, ramie, canvas and synthetics. And vegan shoes and accessories are often inexpensive - up to 60 to 75 percent cheaper than leather!

According to PETA investigation

'At the municipal abattoirs in Bangalore and KolKata, workers, including small children, violently pushed and dragged the animals to the slaughter floor, where they were made to lie pools of blood and guts removed from their dead brethren. The animals were made to watch their companions die while they waited their turn, their eyes wide with tears and terror, their bodies shaking. The workers used dull knives and cut off the animals legs, often while the animal were still conscious.

- For more information on leather visit www.PETAIndia.com

Get Smart Give Up Leather.

दरार

- सुचित्रा जोशी

एक पनहरा (पानी भरने वाला) था। उसके दो बड़े मटके थे, जिन्हें वो एक लकड़ी के दोनों छोरों पर लटका कर उसे गर्दन के पीछे टाँगता था। इनमें से एक मटका फूटा हुआ था और एक साबुत था। वह मटकों को पूरा भरकर चलता, लेकिन नदी से मालिक के घर तक पहुँचते-पहुँचते एक मटका आधा रह जाता था। दो साल से यही सिलसिला जारी था। पनहरा अपने मालिक के घर तक केवल डेढ़ मटका पानी पहुँचा पाता था। जाहिर है सही मटके को खुद पर घमंड हो गया कि उसे पूरी तरह सही बनाया गया है। पुराने और टूटे हुए मटके को खुद पर शर्म आती थी कि वो जिस काम के लिये बनाया गया है, वही काम सिर्फ आधा हो पाता है। अपने अन्दर के दोष के कारण वह दुःखी रहता था। आखिर एक दिन टूटे मटके ने शर्मिन्दा होते हुये मालिक से अपने इस दोष के लिये माफी माँगी, पिछले दो वर्षों से तुम मेरे कारण एक के बजाय आधा मटका पानी ही पहुँचा पाते हो। मेहनत पूरी करते हो, लेकिन पूरी कीमत नहीं पाते। पनहरे ने कहा - “कल जब हम मालिक के घर चलें तो तुम रास्ते में खिलते हुये फूलों को जरूर देखना”। अगले दिन जब वह पहाड़ पर चढ़ा तो पुराने मटके ने गौर किया कि रास्ते में किनारे खूबसूरत और जंगली फूल खिले हुए हैं। मंजिल तक पहुँचते-पहुँचते वो फिर निराश हो गया कि वो अपने भार से आधा रह गया और दुबारा अपने दोष पर शर्म महसूस करने लगा। पनहरा पात्र से बोला, “क्या तुमने गौर किया कि तुम्हारी ही तरफ फूल खिले हैं न कि दूसरे पात्र की तरफ। मैं हमेशा तुम्हारी दरार के बारे में जानता था और मैंने इसका फायदा उठाया। मैंने सड़क के किनारे पर फूलों के बीज डाल दिये थे, जब हम रोज यहाँ से गुजरते थे तो तुम्हारा पानी उन बीजों पर गिरता था। अब मैं इन फूलों को तोड़कर अपने मालिक की टेबिल पर सजाऊँगा। सच, तुम्हारी मदद के बिना ये फूल उस घर की शोभा नहीं बढ़ा सकते थे।”

प्रतिदान

- मुनि क्षमासागर

चिड़िया ने
अपनी चोंच में
जितना समाया
उतना पिया
उतना ही लिया,
सागर में जल
खेतों में दाना
बहुत था।

चिड़िया ने
घोंसला बनाया इतना
जिसमें समा जाए
जीवन अपना
संसार बहुत बड़ा था

चिड़िया ने रोज
एक गीत गाया
ऐसा जो धरती और आकाश
सब में समाया
चिड़िया ने सदा सिखाया
एक लेना
देना सवाया।

Giving

- Translated by Sunita Jain

The bird took
only as much as its beak
could hold;
it swallowed only
as much as it could drink.

Thus the grain in the field,
the water in the sea,
remained enough and plenty.

The bird made its nest
only as big
as its own body.
The world remained so big
and wide.

The bird sang a song
each day
a song that
filled the earth
and the sky.

The bird taught us:
take less
and give plenty.

- 'मुक्ति' से साभार

मुसीबत की आँखों में आँखें डालें

- अमिताभ बच्चन

मैं ड्राइविंग का लाइसेंस लेकर मुंबई पहुँचा था। आज इतना लंबा समय पार करके मैं खुद को फिर से आम आदमी के करीब ही महसूस करता हूँ। उनकी ही शक्ति से मैं दुबारा जीवन पा सका।

बीच में एक विचित्र वक्त आया। चीजें बहुत अनुकूल नहीं रहीं। मैं व्यवहारकुशल कतई नहीं रहा हूँ और लेन-देन का हिसाब-किताब मुझसे कभी संभल नहीं पाया। एबीसीएल में अजिताभ यह सब देख लेते थे, लेकिन उनके अपने कारोबार के सिलसिले में लंदन जा बसने के कारण मैंने सारी चीजें मैनेजर्स के विश्वास पर छोड़ दीं। नतीजा ऐसा हुआ कि वास्तविक नियंत्रण नहीं रह पाया। कंपनी फेल हो गई और करोड़ों का कर्जा चढ़ गया। मैं दिन-रात सोचने लगा कि यह सब कैसे, कब और क्यों होता चला गया। मुझे लगा कि जिन तीसरे हाथों पर मैं पूरा विश्वास करता था, वे मुझे घुन की तरह कुतर-कुतर कर खा रहे थे। 90 करोड़ का कर्ज मेरे सिर पर था। अदालतों में पचपन केस लग गए। मेरे पास केवल एक घर बचा था और उस पर भी कुर्की का आदेश था।

मैं भीतर ही भीतर घुट रहा था। मैंने जब अपना सूरज खूब तेजी से चमकते देखा, तब भी उसकी रोशनी में अपना काम रोज की तरह करते रहने का संकल्प बनाए रखा था, क्योंकि मुझे इस बात का एहसास था कि खूब रोशनीदार सूरज के बाद भी शाम आती है और फिर रात का घना अँधेरा भी आता है, इसलिए मैं विचलित नहीं हुआ। रातें सोचने में गुजरती थीं। वे स्थितियाँ और वे दिन मुझे आज भी याद हैं, जब इनकम टैक्स और कोर्ट कचहरी के अलावा रोजाना कर्जदारों की लाइन लगी रहती थी। ऐसी स्थितियों में भी संयम बना

रहा। एक गहरा शून्य कई दिनों तक मुझे डराता रहा। मित्रों ने सलाह की कि बड़े-बड़े अमीरों ने भी ऐसे हालात में दिवाला घोषित किया है और बाढ़ में तिनका-तिनका जोड़कर अपने आपको फिर से संभाला है। सो तुम भी ऐसा क्यों नहीं कर लेते? लेकिन मेरी आत्मा ऐसा करने को नहीं कहती थी। मैंने इन स्थितियों में भी थोड़ा कर्ज लिया और परिवार की आवश्यकताओं को पूरा किया, लेकिन इस बात की भनक घरवालों को भी नहीं लगी। टीवी वाले मेरे घर की नीलामी होने के समाचार पाकर अपना कैमरा लेकर घर के बाहर आ गए। मना किया तो कुछ लोग कहने लगे कि आप यहाँ से फोटो नहीं लेने दें तो पड़ोस की छत से ले लेंगे। मैंने अपने घर और आसपास की मरम्मत कराई। मेन गेट बदलवाया और अपने मित्रों से कहा कि वे अपनी गाड़ियाँ मेरे पोर्टिको में पार्क कर दिया करें, ताकि लोगों को लगे कि मेरे पास गाड़ियों का काफिला पहले की तरह ही है। बाबूजी के जीवन-दर्शन ने मुझे जिन्दगी का फलसफा सिखाया। वे कहते थे, “यदि मन का हो जाए तो अच्छा है और मन का न हो तो भी अच्छा है।” बस इसी जीवन-दर्शन को मैंने अपने जीवन में लगातार एक ब्रह्म वाक्य की तरह माना है। विपरीत स्थितियाँ आईं तो मुझे लगा कि नए सिरे से जीना होगा।

जो लोग पानी का जहाज चलाते हैं और जो लोग हवाई जहाज चलाते हैं उनको एक सीख दी जाती है कि आप आकाश में हों और घने बादल हों या बरसात हो तो अमूमन एक जो तमन्ना होती है कि तेजी से इसको पार करे निकल जाएँ, लेकिन सिखाया यह जाता है कि यदि घने बादल हों, बरसात हो, आँधी और तूफान हो तो अपनी रफ्तार को धीमा कर देना चाहिए, लेकिन चलना जारी रखा जाए। पानी

के जहाज वाले जो सेलर्स होते हैं, उनको भी यही सिखाया जाता है कि यदि वे कभी किसी तूफान में फँस जाएँ तो उसमें तेजी से निकलने का प्रयत्न मत कीजिए, क्योंकि आप और परेशान होंगे। आप अपनी रफ्तार को धीमी कर लीजिए, लेकिन चलते रहिए आगे। रुकिए मत।

सबसे पहला काम जो मैंने किया वह यह नहीं कि मैं कहीं जाकर नौकरी करूँ और पैसे कमाऊँ और अपने कर्ज को अदा करूँ या कर्जदारों से दूर भागूँ। इसकी बजाय मैंने तन-मन पर ध्यान देना उचित समझा। अगर शरीर ही स्वस्थ नहीं होगा तो जो पीड़ा है वो और तरसाएगी और कष्ट देगी। हालाँकि जवानी के दिनों में मैंने कभी जिम की शक्ल नहीं देखी थी, पर मैंने सोचा पहले अपने शरीर को ठीक कर लूँ, क्योंकि जब शरीर ठीक होगा तो मन भी ठीक होगा और मन ठीक होगा तो सही सोचेगा। जिम के साथ-साथ कुछ चीजों को मैंने अपने आत्मविश्वास को बनाए रखने के लिए शुरू किया। जैसे - कम बोलना, ज्यादा सुनना, नियमित योग करना, किसी की बुराई न करना, गलतियाँ सुधारना, संवेदनशील रहना, संभव नहीं हो तो भी मौका मिलने पर गाहे-बगाहे शांतचित्त होकर आँखें बंद करके बैठना।

सच पूछिए तो मुझमें एक ऐसा आत्मविश्वास पैदा हुआ कि मैं बड़ी से बड़ी मुसीबत का मुकाबला करने की स्थिति में आ गया। हर मुश्किल का सामना मैं उसके साथ दोस्ती करके, उस मुश्किल को अपने साथ जोड़कर, उसकी आँखों में अपनी आँखें डालकर उसे देखने की हिम्मत बटोर पाया और जिसकी वजह से आज मैं फिर से खड़ा हूँ।

आपके पत्र

दो वर्षों से Chirping Sparrow निरन्तर प्राप्त हो रही है। इस पत्रिका को प्राप्त कर मन में उत्साह उत्पन्न होता है। इसको पढ़कर दृढ़ता का भाव आता है एवं जीवन में बहुत आगे बढ़ने का भाव होता है। प्रत्येक पृष्ठ विविध प्रकार से ज्ञान एवं शिक्षा देता है। मुनिश्री द्वारा प्रश्नों के उत्तर प्रेरणात्मक होते हैं। मैं स्वयं पत्रिका को दो-तीन बार पढ़ता हूँ एवं अपने अज्ञेय मित्रों को भी पढ़ाता हूँ। पत्रिका को प्राप्त कर मन में उत्साह बना रहता है।

सौरभ जैन, अशोकनगर

Chirping Sparrow के मिलते ही मैं भी चहकना शुरू कर देती हूँ। यह बहुत ही प्रेरणादायक पत्रिका है। कई बार जो संस्कार हमें सिखाए गए हैं उनको चरितार्थ करने में बहुत मुश्किल आती है। कुछ ही लोग होते हैं जो आपकी तरह सोचते हैं तब मन विचलित होने लगता है। उस समय में Chirping Sparrow से ऊर्जा का संचार हो जाता है। उस एक लेख की तरह ही भावना आती है "MAKE A DIFFERENCE TODAY"। यह लेख बहुत-बहुत अच्छा था। मन में दृढ़ता आती है कि हाँ मैं सही हूँ। माना कि इससे कुछ पीछे रह जाती हूँ लेकिन ग्लानि तो नहीं होती है। और इस तरह से अचल खड़े रहने का, अपने धर्म से जुड़े रहने का यह पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। हमेशा मुझे इसका बेसब्री से इंतजार रहता है। एक महीने पहले से ही मेलबॉक्स देखना शुरू कर देती हूँ।

शैफाली जैन, पुणे

न्यूज लेटर को पढ़कर मेरा मन हर्षोल्लास के साथ जाग उठता है। इस बार मैंने July-September 2006 का अंक पढ़ा, मुझे इसमें मुनिश्री की 'भाई तुम महान हो' कविता बहुत अच्छी लगी। इस पत्रिका के द्वारा उन सारी बातों की जानकारी मिल जाती है जो जीवन में बहुत आवश्यक होती है और जो हम अन्य किताबों में नहीं पढ़ पाते। यह पत्रिका इतने सुन्दर विचारों से परिपूर्ण है कि मेरे पास लिखने के लिये शब्द ही नहीं हैं। **सुषमा जैन, करेरा**

आपके Chirping Sparrow के आशीर्वाद को पाकर अपने आपको गौरवान्वित महसूस करती हूँ कि मैं भी इसका एक अंग हूँ। इस पत्रिका में न केवल धर्म, अपितु ज्ञान-विज्ञान का ऐसा समावेश है जो अपने आप में अद्भुत है। मुनिश्री द्वारा रचित कवितायें एवं हमारे साथी बहिनो-भाइयों द्वारा लिखित रचनायें सभी मर्मस्पर्शी हैं। इस पत्रिका के माध्यम से beginners की शंकाओं का समाधान एवं मार्गदर्शन हमें मिलता है। Pride of Society में जैन समाज की महान उपलब्धियों को पढ़कर खुद उनके जैसे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है। Truth about tradition में धर्म एवं विज्ञान दोनों के नजरिये से सच्चाई का ज्ञान होता है। 'स्पर्श' तो सचमुच अपने नाम को चरितार्थ करती है एवं सभी कहानियाँ कुछ न कुछ संदेश हम तक पहुँचाती रहती हैं। **शुचि जैन, सागर**

दिग्दर्शिका के रूप में यह पत्र समूचे समारोह का दर्शन करा देता है और एक ऊर्जा, शक्ति मन मस्तिष्क में प्रवाहित कर देता है। उत्कृष्टता अभिनन्दनीय है, अतः उत्कृष्ट ज्ञान चारित्र, जीवन की सफलता और महत्ता प्रतिपादित करता है। आपके जन-कल्याणकारी प्रयास हम सभी के साथ-साथ आपके उत्कृष्ट पद की प्राप्ति में सहायक हों, ऐसी भावना भाता हूँ।

डॉ. आई.सी. जैन, दमोह

जब यह पत्रिका मुझे मिलती है तो मुझे लगता है जैसे कोई मेरा अपना आया है जो मेरे लिये मुनिश्री का आशीर्वाद लाया है। जिससे मैं अपनी दिल की सभी बातें कह सकता हूँ चाहे वह किसी भी विषय पर हो। यह पत्रिका मेरी समस्याओं का समाधान करती है, मुझे आगे बढ़ने की सलाह देती है, मुझमें आत्मविश्वास पैदा करती है और मैं अपने आपको बहुत ऊर्जावान महसूस करता हूँ। इस पत्रिका से मुझे मेरा वर्तमान और भविष्य दोनों सुखमय लगने लगते हैं और मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे कोई अपना मिल गया है जो हमेशा मेरे साथ रहेगा।

प्रियंक मंडल, गुना

I received the third issue of Chirping Sparrow. This was really nice and inspiring for us in many fields. The science behind the "Truth about tradition" and "Man you are great" were really good. "तब तुम्हारी बहुत याद आती है।" was one of the best article of the issue.

Monika Jain, Karera

Chirping Sparrow अर्थात् चिड़ियों की चहचहाट जिस प्रकार प्रातःकाल होते ही चिड़ियों की प्यारी एवं मनमोहक चहचहाट हमारे कानों में सुनाई देती है, ठीक उसी प्रकार Chirping Sparrow पत्रिका हमारे हाथ में आते ही हमारी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। हमें ऐसा लगा मानो मुनिश्री की मंगलमय वाणी उनके मनमोहक एवं मंगलमयी प्रवचन, उनके विचार इस पत्रिका के माध्यम से पहुँच रहे हों और हम अबोध अभ्यासरत विद्यार्थियों को धर्म पर चलने का मार्ग बता रहे हों, हमें लाभान्वित कर रहे हों। वास्तव में यह पत्रिका हम जैसे किशोरों, जो कि अज्ञान के अंधकार में भटक रहे हैं, के लिए ज्ञान का, अपने आप को पहचानने एवं आत्मबोध, आत्मानुभूति करा देने का सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका में प्रकाशित समस्या एवं मुनिश्री द्वारा दिए गये समाधान मुझे बहुत ही ज्ञानवर्धक और अपने आप को धर्म की कसौटी पर तौलने के समान लगे। इस पत्रिका के माध्यम से हम किशोरों की अज्ञान रूपी निद्रा समाप्त हो गई।

आशीष जैन, चाँदमाउ

पत्र आये : नितिन जैन, चिरगाँव; राहुल सतभैया, सागर; प्रज्योत दिपा जैन, कारंजा (लाड); ईशान्त जैन, आगरा; अभिषेक जैन, ललितपुर; अंशुल जैन, ग्वालियर; अंजलि जैन, अजयगढ़; प्रीतिका जैन, बड़वाह; सौरभ सिंघई, दमोह; आकांक्षा जैन, कोचीन; कामनी जैन, गगन जैन, आनंदपुर काबू; सौरभ जैन, अजमेर; अनुभूति जैन, नितिका जैन, आकाश जैन, जबलपुर; डॉ. पी.के.जैन, मंडीदीप; लता डी बेललारी, प्रेरक शाह, स्वाति, सिंघई, अशोकनगर; पारूल राज जैन, इंदौर; सिद्धार्थ गोधा, मीना जैन, अजमेर; सौरभ जैन, अभिलेखा जैन, इंदौर; वीना जैन, सागर।

दर्पण

दर्पण मनुष्य का प्रतिबिम्ब देता है,
 सच या झूठ में कभी भेद नहीं करता है।
 अंदर से आदमी गोरा हो या काला,
 यह केवल बाह्य सौंदर्य प्रदर्शित करता है।।
 पर
 दर्पण से केवल रूप प्रदर्शित होता है,
 असली सौंदर्य तो आत्मा में होता है।
 आत्मा जो अजर-अमर होती है,
 शस्त्र, पानी, वायु के वारों से रहित होती है।
 आज
 आज की पीढ़ी केवल दर्पण देखती है।
 फिल्मी सितारों सा सजना सँवरना देखती है
 आत्म सौंदर्य की बातें उसे बोर करती हैं
 इसे वह दिल्ली दूरदर्शन का प्रोग्राम समझती है।

संचित जैन, गोटेगाँव

ऐसी कल्पना क्यों?

“शीशे का घर बनाता है, टूटने पर रोता है,
 मन ऐसी कल्पना क्यों करता है।
 फूलों की चाह रखता है पर काँटों से डरता है,
 फिर भी उन्हें अपने दामन में समाता है।
 न मिलने पर रोता है।
 मन ऐसी कल्पना क्यों करता है।
 आसमान में उड़ता है, परिंदों से डरता है
 मन ऐसी कल्पना क्यों करता है।
 आराधना तो करता है, फल की चाह रखता है,
 न मिलने पर रोता है।
 मन ऐसी कल्पना क्यों करता है।
 विद्यार्थी तो पढ़ता है, सफल होने की चाह रखता है
 सफल न होने पर रोता है
 मन ऐसी कल्पना क्यों करता है।

सोनिका जैन, करीपुर सागर

समर्पित

एक फूल, काँटों में भी हँसा
 मानो... कह गया
 मुश्किल में भी जी कर देखो।
 नदी, जैसे संदेश दे गई
 चलते जाना ही जिंदगी है।
 कोयल, कूकती हुई मानो कह गई
 सारे जग को सुरभित करो स्वर से।
 फिजाएँ, जैसे कह रही
 निर्बाध्य उड़ते चलो मंजिल तक।
 इन सबके प्रति प्यार देखा

एक मानव में,
 जिसने अंबर बनाया था दिशाओं को।
 प्रकृति में
 सुने थे परमात्मा के स्वर,
 इनके चरणों में,
 समर्पित है प्रकृति।
 ये कहते हुये
 हम हैं इनके,
 ये हैं सबके,
 सब हैं अपने।

रिचा गोयल, कटनी

YOUR SPACE

Time

Everything is possible
But conquer the time is impossible
Time will not come back
Though you give a rupee lakh
For the followers it is a maker
but for others it is a undertaker
Time is not a curse
but it is like a nurse
It is bright light for 'him'
For others it is like light dim
Give respect to the time
otherwise you will not climb
(him - a person who knows the value of time)

- Puja M Khandare, Karanja,
Washim (Maharashtra)

Chirping Sparrow

That begins with a "prayer"
with all readers it share,
positive thoughts, goodwill and dare.
Followed by "pride of society"
boost the courage that you go alone,
behind you is all mighty.
Now "truth about tradition"
help your emerge from delusion,
get acquaint better with religion.
Accompanied with inspiring articles
and short stories,
munishri himself answering the queries.
So friends you should have it
else borrow,
that's the magazine....."CHIRPING SPARROW"

- Siddharth Jain, IIT, Delhi

एक घंटा

महत्त्वपूर्ण चिट्ठी

देर रात काम खत्म करके जब पिता घर लौटा तो उसका पाँच वर्षीय बेटा दरवाजे पर खड़ा इंतजार कर रहा था। उसके घर में घुसते ही बेटे ने पूछा - "आप एक घंटे में कितना कमा लेते हैं?" अनपेक्षित सवाल पर खीजकर वह बोला, "तुम्हें यह जानने की जरूरत नहीं।"

बच्चे ने फिर भी जानना चाहा तो उसने कहा, "100 रुपये।" इस पर बच्चे ने पिता से 50 रुपये देने का आग्रह किया।

पिता ने नाराज होकर कहा, "यदि तुम कोई खिलौना लेने के लिए या किसी और बेवकूफी के लिए यह पूछ रहे थे तो अपने कमरे में जाओ और सो जाओ।"

बच्चा चुपचाप अपने कमरे में चला गया। करीब एक घंटे बाद जब पिता का दिमाग शांत हुआ तो उसने सोचा कहीं बेटे को पैसों की वास्तव में आवश्यकता तो नहीं है।

उसने बेटे के कमरे में झाँका। उसे जगा पाकर उसके पास बैठ गया और बोला, "मैंने तुम पर बहुत गुस्सा किया। तुम 50 रुपये के बारे में कुछ कह रहे थे।" बच्चा मुस्कराया और सीधा बैठ गया। पिता से 50 रुपये लेकर उसने तकिए के नीचे रख दिए। तभी पिता की नजर वहाँ पहले से रखे 50 रुपये पर पड़ी। बच्चे ने रुपये गिने और पिता की ओर देखा। पिता दोबारा गुस्सा हो गया और बोला, "तुम और रुपये क्यों माँग रहे थे जबकि तुम्हारे पास पहले से ही 50 रुपये हैं।"

बेटे ने मासूमियत से कहा, "क्योंकि मेरे पास पहले पूरे पैसे नहीं थे, अब पूरे हैं। डैडी, अब मेरे पास सचमुच पूरे 100 रुपये हैं। क्या मैं आपका एक घंटा खरीद सकता हूँ? आप कल घर जल्दी आ जाना। मैं शाम का खाना आपके साथ खाना चाहता हूँ।" पिता के पास बेटे की बात का कोई जवाब नहीं था।

सबक : पैसा कमाने के लिए परिवार न भूलें।